दैनिक जागरण 30/08/2026

चार साल में 35 मिलियन टन दाल उत्पादन का लक्ष्य

विशेषज्ञ बोले- उत्पादन 27.4, एक वर्ष में 1.75 मिलियन टन बढ़ोतरी

- एक मिलियन हेक्टेयर उत्पादक भूमि कम होने के बावजूद बढ़ा है उत्पादन, अब 2030-31 तक इसे और बढ़ाने की है तैयारी
- बदलते मौसम, मिट्टी की सेहत और पोषण की चुनौती से निपटने के लिए अब 'मिशन सेहत' से जोड़ा जाएगा दलहनी खेती को

जागरण संवाददाता, कानपुर : देश को दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) ने वर्ष 2030-31 तक दालों का उत्पादन बढ़ाकर 35 मिलियन टन करने का लक्ष्य रखा है। वर्तमान में देश में करीब 27.4 मिलियन टन दलहन उत्पादन हो रहा है। शेष दालों का आयात दूसरे देशों से किया जाता है। पिछले वर्ष में उत्पादन में करीब 1.75 मिलियन टन की वृद्धि हुई है। हालांकि एक मिलियन हेक्टेयर उत्पादक भूमि कम हुई है। वहीं, बदलते मौसम, मिट्टी की सेहत और पोषण की चुनौती से निपटने के लिए आइसीएआर और भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) ने 'मिशन सेहत (साइंस एक्सीलेंस फार हेल्थ थ्रू एग्रीकल्चरल ट्रांसफार्मेशन)' शुरू किया है। इसके तहत खेत से थाली तक स्वस्थ और पौष्टिक भोजन पहुंचाने के साथ मिट्टी, पौधे, पशु, मानव और पर्यावरण के स्वास्थ्य को एक साथ जोड़कर काम किया जाएगा। यह जानकारी कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव तथा आइसीएआर के महानिदेशक डा. एमएल जाट ने शनिवार को दी। वह चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) और भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान (आइआइपीआर) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित रबी दलहन पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की 31वीं वार्षिक समूह बैठक में आए थे। उन्होंने सीएसए में बने मिलेट्स प्रसंस्करण, पैकेजिंग एवं सह विपणन केंद्र का उद्घाटन भी किया।

खेत के स्वास्थ्य से जुड़ेगी इंसान की सेहत : डा. जाट ने बताया कि 'मिशन सेहत' के तहत कृषि और स्वास्थ्य को एक साथ जोड़कर काम किया जा रहा है। इसका उद्देश्य केवल अधिक उत्पादन हासिल करना नहीं, बल्कि ऐसा भोजन तैयार करना है, जो पोषण की दृष्टि से बेहतर हो। इसके लिए बायोफोर्टिफाइड फसलों को बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि स्वस्थ भोजन के लिए केवल मानव स्वास्थ्य को देखना पर्याप्त नहीं है। मिट्टी का स्वास्थ्य, पौधों का स्वास्थ्य, पशुओं का स्वास्थ्य, मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण का स्वास्थ्य एक-दूसरे से जुड़े हैं।

जरूरत से ज्यादा यूरिया उपयोग ठीक नहीं : डा.जाट ने किसानों को रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के संतुलित इस्तेमाल की सलाह दी। उन्होंने कहा कि जिस तरह चिकित्सक की सलाह के बिना जरूरत से ज्यादा दवा लेना नुकसानदेह है, उसी तरह खेत में आवश्यकता से अधिक एग्रोकेमिकल्स का प्रयोग भी मिट्टी और पर्यावरण के लिए ठीक नहीं है। जरूरत न होने के बावजूद यूरिया डालने से मिट्टी की सेहत प्रभावित होती है और किसान की लागत भी बढ़ती है। उन्होंने किसानों से मृदा स्वास्थ्य कार्ड के आधार पर उर्वरकों का प्रयोग करने की अपील की। पहले मिट्टी की जांच कर यह पता लगाना जरूरी है कि उसमें किस पोषक तत्व की कमी है। इसके बाद उसी के अनुसार खाद और उर्वरक का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि संतुलित पोषण ही स्वस्थ मिट्टी और बेहतर उत्पादन का आधार है।

ये रहे मौजूद : बैठक में आइसीएआर के उपमहानिदेशक डा. डीके यादव, आइआइपीआर के निदेशक डा.जीपी दीक्षित, सीएसए के कुलपति प्रो. संजीव गुप्ता, डा. मसुद अली सहित 100 दलहन विज्ञानी उपस्थित रहे।

सीएसए में श्री अन्न प्रसंस्करण केंद्र का शुभारंभ करते आइसीएआर के महानिदेशक डा. एमएल जाट (बाएं), साथ में कुलपति डा.संजीव गुप्ता व प्रो. विजय कुमार यादव • जागरण

95 प्रतिशत नई किस्में मौसम की मार सहने में सक्षम

महानिदेशक ने बताया कि जलवायु परिवर्तन कृषि के सामने बड़ी चुनौती है। इसे देखते हुए आइसीएआर ऐसी फसल किस्में विकसित कर रहा है, जो सूखा, पाला, अधिक तापमान और ज्यादा वर्षा जैसी परिस्थितियों का सामना कर सकें। आइसीएआर से जारी करीब 95 प्रतिशत नई किस्मों में मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों को सहने की क्षमता विकसित की गई है। उन्होंने कहा कि पिछले एक दशक में मौसम संबंधी चुनौतियां बढ़ने के बावजूद कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है। जलवायु अनुकूल किस्मों व नई तकनीकों की भूमिका रही है।

प्रिंसिपल साइंटिस्ट बनेंगे केवीके प्रमुख कर्मियों को मिलेंगे तीन प्रमोशन

श्याम पंट सिंह • जागरण

कानपुर : देशभर के 731 कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) में कार्यरत 10 हजार से अधिक वैज्ञानिकों और कर्मचारियों के लिए जल्द नई सेवा नियमावली लागू होगी। नए नियमों के तहत केवीके प्रमुख पदोन्नति पाकर प्रिंसिपल साइंटिस्ट के स्तर तक पहुंच सकेंगे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) ने इसके लिए गाइडलाइन तैयार कर ली है। सेवा नियमावली लागू होने से कर्मचारियों को पदोन्नति और सेवा लाभ मिलने का रास्ता साफ होगा। यह जानकारी आइसीएआर के महानिदेशक डा. एमएल जाट ने दी। वह कानपुर में अटारी जोन-तीन द्वारा आयोजित कृषक चौपाल में आए थे। उन्होंने बताया कि गाइडलाइन जल्द सभी राज्यों को भेजी जाएगी।

डा. जाट ने बताया कि कर्मचारियों को अनुभव और सेवा अवधि के आधार पर प्रमोशन मिलेगा। वहीं सब्जेक्ट मैटर स्पेशलिस्ट (विषय वस्तु विशेषज्ञ) को पूरी सेवा अवधि में दो पदोन्नति मिलेंगी। इसके अलावा वाहन चालकों और अन्य कर्मचारियों को भी सेवाकाल के दौरान तीन पदोन्नति का लाभ दिया जाएगा।

वेतन भुगतान में भी आएगी नियमितता : अटारी निदेशक डा. राघवेंद्र सिंह ने बताया कि केवीके में कई कर्मचारी योजना मद में नियुक्त हैं, जिससे बजट मिलने पर ही वेतन मिलता है। इससे फायदा यह होगा कि सभी कर्मचारियों की सेवा शर्तों में एकरूपता आएगी।

उत्तर प्रदेश में विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों के अधीन केवीके

विश्वविद्यालयों के नाम	कितने केवीके
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय : कानपुर	25
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय : अयोध्या	15
सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय : मेरठ	25
बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय : बांदा	07

गो रक्षाबंधन महोत्सव मनाया

रविवार
कानपुर, 30 अगस्त 2026
वर्ष 69 अंक 239
आर.एन.आई. नं. 49984/58
रजि. सिम-2/CPM/3/KPHO/2013-14
मूल्य 2 रुपया पृष्ठ 8

हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आर्थिक दैनिक
व्यापारसंदेश

e-paper : www.vyaparsandesh.com

उत्पादकता बढ़ाने के लिए 'उपज बाधा' तोड़ना होगा : डॉ. एम एल जाट

कानपुर, 29 अगस्त (निस)। अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की दो दिवसीय 31वीं वार्षिक समूह बैठक का शुभारंभ चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर में हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता डॉ. एम एल जाट, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा की गई।

अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. जाट ने कहा कि दलहन अनुसंधान में वर्तमान चुनौतियों की प्राथमिकता निर्धारित कर लक्ष्य आधारित कार्ययोजना बनाना आवश्यक है। किसान के लिए उत्पादन के साथ लाभप्रदता सर्वोच्च प्राथमिकता है, इसलिए अनुसंधान एवं तकनीकों का विकास किसानों की आय एवं लाभ बढ़ाने की दिशा में होना चाहिए। उन्होंने कहा कि उत्पादकता में अनिश्चितता से बाजार में भी अनिश्चितता उत्पन्न होती है, अत: उत्पादन एवं बाजार दोनों को ध्यान में रखते हुए तकनीकों का विकास जरूरी है। डॉ जाट ने दलहन फसलों की उत्पादकता में आ रही बाधाओं को दूर करते हुए 'उपज बाधा' को तोड़ने तथा स्पष्ट उत्पादकता लक्ष्य निर्धारित करने पर जोर दिया। जैविक एवं अजैविक तनावों के प्रभाव को कम करने के लिए जलवायु अनुकूल एवं तनाव सहनशील तकनीकों के विकास की आवश्यकता बताई।डॉ. जाट ने कहा कि दलहनी फसलों में फास्फोरस एक महत्वपूर्ण पोषक तत्व है, जिसके समुचित एवं संतुलित प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। साथ ही पोषक तत्व उपयोग दक्षता बढ़ाने के लिए उन्नत प्रबंधन तकनीकों को अपनाने पर बल दिया।उन्होंने कहा कि अनुसंधान से विकसित सर्वोत्तम कृषि पद्धतियों का व्यापक स्तर पर किसानों तक पहुंचना और उनका प्रभावी अंगीकरण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। इसके लिए सुदृढ़ एवं विश्वसनीय बीज प्रणाली विकसित करना भी आवश्यक है, ताकि गुणवत्तायुक्त बीज किसानों को समय पर उपलब्ध हो सके।इस अवसर पर उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ डी के यादव द्वारा कहा गया कि उपलब्ध नवीन प्रजातियां एवं सफल तकनीक का दलहनी फसलों में समावेश कर दलहन का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ एस के झा द्वारा बताया गया कि दलहन के कुल उत्पादन में 60% की भागीदारी रबी दलहनी फसलों की है। दलहनी फसलें मिट्टी में नाइट्रोजन का यौगिकीकरण करती हैं।

भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ जी पी दीक्षित द्वारा बताया गया कि वैज्ञानिकों एवं किसानों के बीच में तकनीकी की खाई को पूरा करने के लिए प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के माध्यम से किसानों में जागरूकता की जा रही है तथा कम लागत तकनीक जैसे जैविक उर्वरकों का प्रोत्साहित किया जा रहा है।विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ संजीव गुप्ता द्वारा बताया गया कि दलहन उत्पादन में विश्वविद्यालय की सार्थक भूमिका रही है तथा देश में उकठा रोग के प्रति रोगरोधी प्रजाति का विकास सर्वप्रथम इस विश्वविद्यालय द्वारा किया गया है। उन्होंने कहा कि दलहन में आत्मनिर्भरता के लिए भारत सरकार द्वारा भरपूर बजट का आवंटन किया गया है। परियोजना समन्वयक डॉ शैलेश त्रिपाठी द्वारा गत वर्ष की उपलब्धियां का प्रस्तुतीकरण करते हुए बताया कि परियोजना के अंतर्गत बायो फोर्टीफाइड एवं मशीन से कटाई करने वाली प्रजातियों को प्रचार प्रसार किया जा रहा है।कार्यक्रम में सहायक महानिदेशक (बीज)डॉ बी आर चौधरी, कृषि आयुक्त डॉ पी के सिंह, डॉ मसूद अली आदि उपस्थित रहे।कार्यक्रम का आयोजन चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से किया गया जिसमें विभिन्न प्रदेशों से लगभग 100 दलहन वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया। उद्घाटन समारोह के पश्चात डॉ एम एल जाट द्वारा मृदा विज्ञान विभाग में स्थापित पेस्टीसाइड प्रयोगशाला का भ्रमण करते हुए प्रयोगशाला के रखरखाव एवं कार्य की प्रशंसा की गई।

नाव
गई

पक्ष, एक
क संपत्ति
चिव, एक
ांस्कृतिक
सचिव के
ी सदस्यों

ी सदस्यों
एवं चुनाव
हमति से
के सभी
से निर्णय

ी सदस्यों
व प्रक्रिया
त नियमों
लन करते
ांतिपूर्ण,
रिवारिक
में सहयोग

...मली बड़ी जिम्मेदारी, ...प्रदेश महासचिव बने

...ीत सिंह ...काल की ... वह पार्टी ...

वरिष्ठ उपाध्यक्ष शैलेंद्र यादव मिन्टू, महासचिव संजय सिंह बंटी सेंगर, प्रदेश सचिव के के शुक्ला, परमवीर सिंह गंभीर, सतबीर सिंह कबीर, जसबीर

जिलाधिका...
निर्धारित ति...
की टीमें स...
की नियमि...
स्कूलों औ...
माध्यम से अ...
पहुंचाने के...
विशेष ज...
संचालित ...
नगर आयु...
प्रतिरक्षण ...
यादव, जे...
जेहरा, अब...
कैलाश, डी...
सिंहा, एडी...
सहित विभि...
मौजूद रहे।

गंगा मे... वाले ... परिज... चार-...

कानपु... बिठूर में ग... पत्थर घाट प... में डूबने से... मृतकों के ... ओर से च... आर्थिक स... शनिवार ब... अभिजीत ... के परिजनों... अंतर्गत स्वी... की अहैतुक... की। विगत... पत्थर घाट... अलग-अल... की मृत्यु हो... प्रशासन ने... दैवीय आप... आर्थिक स... शुरू की।... अभिलेखों ... प्रत्येक मृत... चार लाख ... स्वीकृत की... सिंह सांगा ... के सदस्य ... भरपाई संभ... की घड़ी मे... के साथ ख... आदित्यनाथ... की संवेदन... प्रभावित ... आर्थिक स... इसी क्रम मे... को चार-च... उपलब्ध क...

दैनिक भास्कर

कानपुर सिटी 30-08-2026

मिशन सेहत • आईसीएआर से जारी 95% नई किस्मों में सूखा, पाला, अधिक तापमान सहने की क्षमता

खेत से थाली तक स्वस्थ भोजन पहुंचाने की कवायद, आईसीएआर के डीजी बोले-मिट्टी की जांच के बिना खेत में यूरिया न डालें

भास्कर न्यूज़ | कानपुर

कानपुर में थाली तक पौष्टिक और स्वस्थ भोजन पहुंचाने के लिए आईसीएआर और आईसीएमआर ने 'मिशन सेहत' शुरू किया है। इसमें कृषि और स्वास्थ्य को जोड़कर पोषणयुक्त भोजन तैयार करने पर काम किया जा रहा है। आईसीएआर के डीजी डॉ. एमएल जाट ने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए भोजन का पौष्टिक होना जरूरी है। मिशन में बेहतर पोषण वाली बायोफोर्टिफाइड फसलों को बढ़ावा देने के साथ मिट्टी, पौधे, पशु और पर्यावरण के स्वास्थ्य पर भी ध्यान दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन को देखते हुए फसलों की नई किस्मों को मौसम की मार सहने लायक बनाया जा रहा है। आईसीएआर से जारी करीब 95% नई किस्मों में सूखा, पाला, अधिक तापमान और ज्यादा बारिश जैसी परिस्थितियों को सहने की क्षमता है।

भोजन स्वस्थ नहीं तो इंसान भी स्वस्थ नहीं

आईसीएआर के डीजी ने बताया कि मिशन सेहत में सिर्फ मानव स्वास्थ्य को अलग से नहीं देखा जा रहा। मिट्टी का स्वास्थ्य, पौधे का स्वास्थ्य, पशुओं का स्वास्थ्य, मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण का स्वास्थ्य एक-दूसरे से जुड़े हैं। इसी को वन के दृष्टिकोण के तौर पर देखा जा रहा है। उन्होंने कहा कि इसमें क्लाइमेट चेंज, मिट्टी की सेहत, प्राकृतिक खेती, एकीकृत कृषि प्रणाली और उर्वरक-कीटनाशकों के अंधाधुंध इस्तेमाल जैसे मुद्दे भी शामिल हैं। यानी फसल कैसे पैदा हो रही है और उसका असर इंसान व पर्यावरण पर क्या पड़ रहा है, दोनों को साथ लेकर काम किया जा रहा है।

जांच बताएगी खेत को क्या चाहिए

डॉ. जाट ने सॉइल हेल्थ कार्ड के आधार पर उर्वरकों के इस्तेमाल की जरूरत बताई। उन्होंने कहा कि पहले मिट्टी की जांच होनी चाहिए और उसमें जिस पोषक तत्व की कमी है, उसी के अनुसार खाद या उर्वरक का इस्तेमाल किया जाए। उदाहरण दिया कि यदि मिट्टी में माइक्रोन्यूट्रिएंट की कमी है और किसान यूरिया का बैग डालता जा रहा है, तो इससे वास्तविक कमी दूर नहीं होगी। इसलिए खेत की जरूरत के हिसाब से संतुलित इस्तेमाल ही सही रास्ता है। डॉ. जाट ने बताया कि 'मिशन सेहत' के तहत बायोफोर्टिफाइड फसलों को बढ़ावा दिया जा रहा है। ऐसी फसलें विकसित की जा रही हैं, जिनमें पोषण की मात्रा और गुणवत्ता बेहतर हो।

हिंदुस्तान 30/08/2026

आयोजन | चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि (सीएसए) में दो दिवसीय अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की 31वीं वार्षिक समूह बैठक

क्षेत्रफल घटा पर तकनीक से बढ़ी दलहन की पोषणयुक्त पैदावार

कानपुर, प्रमुख संवाददाता। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के महानिदेशक एवं कृषि, अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) के सचिव डॉ. एमएल जाट ने कहा कि कृषि में तकनीक का प्रयोग हो रहा। पिछले सालों में करीब 16 लाख हेक्टेयर कम क्षेत्रफल के बावजूद गुणवत्तायुक्त पैदावार में वृद्धि हुई है। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि (सीएसए) में दो दिवसीय अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की 31वीं वार्षिक समूह बैठक का आयोजन हुआ। शुभारंभ मुख्य अतिथि डॉ. एमएल जाट, विवि के कुलपति डॉ. संजीव गुप्ता ने किया। डॉ. जाट ने कहा कि वर्तमान में वैज्ञानिक पोषणयुक्त फसलों के लिए बीज विकसित कर रहे हैं। उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. डीके यादव ने कहा कि उपलब्ध नवीन प्रजातियां एवं सफल तकनीक का दलहनी फसलों में समावेश कर दलहन के पैदावार को बढ़ाया जा सकता है। सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ. एसके झा ने बताया गया कि दलहन के कुल पैदावार में 60 फीसदी की भागीदारी रबी दलहनी फसलों की है। आईआईपीआर के निदेशक डॉ. जीपी दीक्षित ने कहा कि वैज्ञानिकों एवं किसानों के बीच में तकनीकी खाई को पूरा करने के लिए जागरूकता जरूरी है। विवि के कुलपति डॉ. संजीव गुप्ता ने बताया गया कि दलहन पैदावार में विवि की सार्थक भूमिका है। डॉ. बीआर चौधरी, डॉ. पीके सिंह, डॉ. मसुद अली, डॉ. खलील खान आदि मौजूद रहे।

केवीके बना रहे सशक्त: किसान–वैज्ञानिक नवाचार संवाद' कार्यक्रम को आयोजन हुआ। शुभारंभ मुख्य अतिथि डॉ. एमएल जाट रहे। पद्मश्री किसान चंद्रशेखर सिंह, सीएसए विवि के कुलपति डॉ. संजीव गुप्ता, महिला उद्यमी नीलम त्यागी ने ग्रामीण विकास के क्षेत्र में नवाचारों तथा किसानों की भूमिका पर जानकारी दी। कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) किसानों को सशक्त बना विकसित भारत के सपने को साकार करने में खास भूमिका निभा रहे हैं। डॉ. जाट ने किसानों एवं वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया। अटारी के निदेशक डॉ. राघवेंद्र सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। इस मौके पर डॉ. रंजय सिंह, डॉ. आरआर बर्मन आदि मौजूद रहे।

सीएसए में दो दिवसीय अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की 31वीं वार्षिक समूह बैठक का आयोजन हुआ।

तीन वर्षों में बायोफोर्टिफाइड फसलें बनाएंगी सेहत

कानपुर। अगले तीन वर्षों में फसलों में रसायनों के प्रयोग खत्म कर बायोफोर्टिफाइड फसलें तैयार की जाएंगी। इससे इंसान स्वस्थ रहेंगे। आईसीएआर ने न सिर्फ रोडमैप तैयार कर लिया है बल्कि इसे प्रभावी बनाने के लिए आईएमसी (इंडियन मेडिकल काउंसिल) संग अनुसंधान व नवाचार भी कर रहे है। यह जानकारी आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. एमएल जाट ने दी। आईसीएआर के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. डीके यादव ने बताया कि संस्थान के पास जीन बैंक बना है, जिसमें 4.7 लाख फसलों की आनुवांशिक सामग्री को सुरक्षित व संरक्षित है। डॉ. जाट ने बताया कि एथेनॉल को लेकर गन्ने की खपत बढ़ी है, जिससे नई प्रजातियां विकसित की जा रही हैं। सितंबर में करनाल मे विकसित गन्ना की नई प्रजाति लांच की जाएगी

एआई से तैयार होगी दलहनी बीजों की नई प्रजाति

सीएसए में आईसीएआर के महानिदेशक डॉ.एमएल जाट बोले- जीनोम एडिटिंग से बदलेंगे बीजों का मिजाज

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। दलहनी फसलों की नई प्रजाति आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) की मदद से विकसित की जाएंगी। इसके लिए 4.75 लाख बीजों का डाटा बैंक तैयार किया गया है। फसलों की नई प्रजातियों के लिए पुराने बीजों के जीन में सुधार किया जाएगा। पांच साल शोध कार्यों के लिए 72 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं, जिसे भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान समेत 15 सेंटरों पर शोध कार्य किए जाएंगे। यह जानकारी शनिवार को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. एमएल जाट ने पत्रकारवार्ता में दी। उन्होंने बताया कि नए बीज के ब्रीडर को ढाई लाख और हाइब्रिड के ब्रीडर को पांच लाख रुपये दिए जाएंगे। जीनोम एडिटिंग और प्रीडिक्टिव ब्रीडिंग की जाएगी। दलहनी बीजों की डिजिटल कुंडली भी तैयार की जा रही है।

उन्होंने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) साइंस एक्सीलेंस फॉर हेल्थ थ्रू एग्रीकल्चरल ट्रांसफॉर्मेशन (सेहत) मिशन चला रहा है। मिशन के जरिये कृषि पोषण और स्वास्थ्य सेवाओं को एक सूत्र में पिरोया जाएगा। भोजन को दवा बना लिया जाए। इससे व्यक्ति को स्वस्थ रहने के लिए सारी जरूरी चीजें भोजन में ही मिल जाएगी। बायो पेस्टीसाइड्स और बायो फर्टिलाइजर को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। किसानों को जागरूक किया जाएगा कि मिट्टी की जांच कराकर ही उसमें यूरिया डालें।

सीएसए स्थित यूटिलिटी भवन में आयोजित अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की सामूहिक बैठक में पुस्तक का विमोचन करते मुख्य अतिथि आईसीएआर के महानिदेशक डा. मांगी लाल जाट व साथ में बायें से डॉ. एसके झा, डॉ. डीके यादव, डॉ. संजीव गुप्ता, डॉ. जीवी दत्त व अन्य। संवाद

रोग प्रतिरोधक और मौसम के अनुकूल दलहन हो विकसित

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में रबी दलहन की वार्षिक बैठक शुरु

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) में शनिवार को जलवायु अनुकूल, तनाव सहनशील और रोग प्रतिरोधक दलहनी फसलों की प्रजातियां विकसित करने पर जोर दिया गया। मौका था अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की दो दिवसीय वार्षिक समूह बैठक का, जिसमें देश भर से कृषि वैज्ञानिक और कृषि विशेषज्ञ शामिल हुए। दलहन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने और नई तकनीक अपनाने को लेकर मंथन किया गया।

देश भर के सौ से अधिक कृषि विज्ञानियों ने उत्पादन बढ़ाने के लिए तकनीक पर किया मंथन

अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. एमएल जाट ने की। उन्होंने कहा कि रिसर्च में प्राथमिकता निर्धारित कर लक्ष्य आधारित कार्ययोजना बनाना आवश्यक है। अनुसंधान और तकनीकों का विकास किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में होना चाहिए। दलहन फसलों की उत्पादकता में आने वाली बाधाओं को दूर करने और 'उपज बाधा' तोड़ने पर जोर जोर दिया। उप महानिदेशक डॉ. डीके यादव ने बताया कि नवीन प्रजातियां और तकनीक का दलहनी फसलों में समावेश कर दलहन का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। सहायक महानिदेशक डॉ. एसके झा, आईआईपीआर के निदेशक डॉ. जीपी दीक्षित ने भी विचार व्यक्त किए। कुलपति डॉ. संजीव गुप्ता, डॉ. शैलेश त्रिपाठी, सहायक महानिदेशक (बीज) डॉ. बीआर चौधरी, कृषि आयुक्त डॉ. पीके सिंह, डॉ. मसूद अली आदि रहे।

उत्पादकता में बाधा दूर कर लक्ष्य निर्धारित करें वैज्ञानिक

दलहन अनुसंधान में उत्पादकता बढ़ाने के लिए 'उपज बाधा' तोड़ना होगा

पुस्तक का विमोचन करते डीजी डॉ. एमएल जाट, कुलपति डॉ. संजीव गुप्ता व अन्य।

कानपुर, 29 अगस्त। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित अखिल भारतीय रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की ओर से दो दिवसीय 31वीं वार्षिक समूह बैठक का शुभारंभ करते हुए मुख्य अतिथि आईसीएआर के सचिव व महानिदेशक डॉ. एम एल जाट ने कहाकि दलहन अनुसंधान में वर्तमान चुनौतियों की प्राथमिकता निर्धारित कर लक्ष्य आधारित कार्ययोजना बनाना आवश्यक है। किसान के लिए उत्पादन के साथ लाभ जरूरी है। इसलिए अनुसंधान एवं तकनीकों का विकास किसानों की आय एवं लाभ बढ़ाने की दिशा में होना चाहिए। उन्होंने कहा कि उत्पादन और बाजार दोनों को ध्यान में रखते हुए तकनीकों का विकास करना जरूरी है। डॉ जाट ने दलहन फसलों की उत्पादकता में आ रही बाधाओं को दूर करते हुए 'उपज बाधा' को तोड़ने तथा स्पष्ट उत्पादकता लक्ष्य निर्धारित करने पर जोर दिया। कार्यक्रम में वैज्ञानिकों की लिखी पुस्तकों का विमोचन किया गया। उप महानिदेशक डॉ डी के यादवने कहाकि उपलब्ध नवीन प्रजातियां एवं सफल तकनीक का दलहनी फसलों में समावेश कर दलहन का उठपादन बढ़ाया जा सकता है। सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ एस के झा ने दलहन के कुल उत्पादन में 60 प्रतिशत की भागीदारी रबी दलहनी फसलों की है। दलहनी फसलें मिट्टी में नाइट्रोजन का यौगिकीकरण करती हैं। भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ जी पी दीक्षित ने कहाकि वैज्ञानिकों एवं किसानों के बीच में तकनीकी की खाई को पूरा करने के लिए प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के माध्यम से से किसानों में जागरूकता की जा रही है तथा कम लागत तकनीक जैसे जैविक उर्वरकों का प्रोत्साहित करना जरूरी है। सीएसए के कुलपति डॉ संजीव गुप्ता ने बताया कि दलहन उत्पादन में विश्वविद्यालय की सार्थक भूमिका रही है तथा देश में उकठा रोग के प्रति रोगरोधी प्रजाति का विकास सर्वप्रथम इस विश्वविद्यालय द्वारा किया गया है। कुलपति ने कहाकि दलहन में आत्मनिर्भरता के लिए भारत सरकार द्वारा भरपूर बजट का आवंटन किया गया है। परियोजना समन्वयक डॉ शैलेश लिपाठी ने गत वर्ष की उपलब्धियां का प्रस्तुतीकरण करते हुए बताया कि परियोजना के अंतर्गत बायो फोर्टीफाइड एवं मशीन से कटाई करने वाली प्रजातियों को प्रचार प्रसार किया जा रहा है। इस दौरान सहायक महानिदेशक डॉ बी आर चौधरी, कृषि आयुक्त डॉ पी के सिंह, डॉ मसूद अली आदि उपस्थित रहे।

सत्य का असर समाचार पत्र

कानपुर से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

दिनांक : 30 अगस्त 2026, रविवार

प्रशासन

— प्रेस विज्ञप्ति —

दो दिवसीय रबी दलहन वार्षिक बैठक का हुआ शुभारंभ

दलहन अनुसंधान में उत्पादकता बढ़ाने के लिए 'उपज बाधा' तोड़ना होगा : डॉ. एम एल जाट

पत्रकार जितेंद्र कुमार सिंह पटेल

अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की दो दिवसीय 31वीं वार्षिक समूह बैठक का शुभारंभ चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर में हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता डॉ. एम एल जाट, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा की गई।

- अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. जाट ने कहा कि दलहन अनुसंधान में वर्तमान चुनौतियों की प्राथमिकता निर्धारण कर लक्ष्य आधारित कार्ययोजना बनाना आवश्यक है। किसान के लिए उत्पादन के साथ लाभप्रदता सर्वोच्च प्राथमिकता है, इसलिए अनुसंधान एवं तकनीकों का विकास किसानों की अ य एवं लाभ बढ़ाने की दिशा में होना चाहिए।

डॉ. जाट ने अपने संबोधन में दिए महत्वपूर्ण संदेश

- उत्पादकता में अनिश्चितता से बाजार में भी अनिश्चितता उत्पन्न होती है, इसलिए उत्पादन एवं बाजार दोनों को ध्यान में रखते हुए तकनीकों का विकास जरूरी है।
- दलहन फसलों की उत्पादकता में आ रही बाधाओं को दूर करते हुए 'उपज बाधा' को तोड़ने तथा स्पष्ट उत्पादकता लक्ष्य निर्धारित करने पर जोर दिया।
- जैविक एवं अजैविक तनावों के प्रभाव को कम करने के लिए जलवायु अनुकूल एवं तनाव सहनशील तकनीकों के विकास की आवश्यकता बताई।
- दलहनी फसलों में फास्फोरस के समुचित एवं संतुलित प्रबंधन, तथा पोषक तत्व उपयोग दक्षता बढ़ाने पर बल दिया।
- अनुसंधान से विकसित सर्वोत्तम कृषि पद्धतियों का व्यापक स्तर पर किसानों तक पहुंचना व अंगीकरण सुनिश्चित करना आवश्यक बताया।

- उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ डी के यादव द्वारा कहा गया कि उपलब्ध नवीन प्रजातियां एवं सफल तकनीक का दलहनी फसलों में समावेश कर दलहन का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।
- भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ जी पी दीक्षित द्वारा बताया गया कि बैज्ञानिकों एवं किसानों के बीच में तकनीकी की खाई को पूरा करने के लिए प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के माध्यम से किसानों में जागरूकता की जा रही है तथा कम लागत तकनीक जैसे जैविक उर्वरकों का प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ संजीव गुप्ता द्वारा बताया गया कि दलहन उत्पादन में विश्वविद्यालय की सार्थक भूमिका रही है तथा देश में उकठा रोग के प्रति रोगरोधी प्रजाति का विकास सर्वप्रथम इस विश्वविद्यालय द्वारा किया गया है। उन्होंने कहा कि दलहन में आत्मनिर्भरता के लिए भारत सरकार द्वारा भरपूर बजट का आवंटन किया गया है।
- परियोजना समन्वयक डॉ शैलेश त्रिपाठी द्वारा गत वर्ष की उपलब्धियों का प्रस्तुतीकरण करते हुए बताया कि परियोजना के अंतर्गत बायो फोर्टीफाइड एवं मशीन से कटाई करने वाली प्रजातियों को प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

कार्यक्रम में सहायक महानिदेशक (बीज) डॉ बी आर चौधरी, कृषि आयुक्त डॉ पी के सिंह, डॉ मसूद अली आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आयोजन चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से किया गया जिसमें विभिन्न प्रदेशों से लगभग 100 दलहन बैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया। उद्घाटन समारोह के पश्चात डॉ एम एल जाट द्वारा मृदा विज्ञान विभाग में स्थापित पेस्टीसाइड प्रयोगशाला का भ्रमण करते हुए प्रयोगशाला के रखरखाव एवं कार्य की प्रशंसा की गई।

बैठक की प्रमुख जानकारी

- आयोजन : अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की 31वीं वार्षिक समूह बैठक
- तिथि : 29-30 अगस्त 2026
- स्थान : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.)
- प्रतिभागी : विभिन्न प्रदेशों से लगभग 100 दलहन वैज्ञानिक

पत्रकार जितेंद्र कुमार सिंह पटेल संपर्क सूत्र 9956 8340 16

R.N.I.NO. UPHIN/2008/29355
डाक पंजीकन संख्या KANPUR Cty 328/2012

दैनिक वक्त दर्शन

कानपुर से प्रकाशित, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, पंजाब, आंध्र प्रदेश, राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र एवं दिल्ली, मुम्बई, तेलंगाना

वर्षः 18 अंक :212 कानपुर, रविवार 30 अगस्त 2026 पृष्ठ : 8

दो दिवसीय रबी दलहन वार्षिक बैठक का हुआ शुभारंभ:दलहन अनुसंधान में उत्पादकता बढ़ाने के लिए 'उपज बाधा' तोड़ना होगा : डॉ. एम एल जाट

कानपुर नगर वक्त दर्शन कार्यालय गोपाल नगर संवादाताअखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की दो दिवसीय 31वीं वार्षिक समूह बैठक का शुभारंभ चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर में हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता डॉ. एम एल जाट, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा की गई। अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. जाट ने कहा कि दलहन अनुसंधान में वर्तमान चुनौतियों की प्राथमिकता निर्धारित कर लक्ष्य आधारित कार्ययोजना बनाना आवश्यक है। किसान के लिए उत्पादन के साथ लाभप्रदता सर्वोच्च प्राथमिकता है, इसलिए अनुसंधान एवं तकनीकों का विकास किसानों की आय एवं लाभ बढ़ाने की दिशा में होना चाहिए। उन्होंने कहा कि उत्पादकता में अनिश्चितता से बाजार में भी अनिश्चितता उत्पन्न होती है, अत: उत्पादन एवं बाजार दोनों को ध्यान में रखते हुए तकनीकों का विकास जरूरी है। डॉ जाट ने दलहन फसलों की उत्पादकता में आ रही बाधाओं को दूर करते हुए 'उपज बाधा' को तोड़ने तथा स्पष्ट उत्पादकता लक्ष्य निर्धारित करने पर जोर दिया। जैविक एवं अजैविक तनावों के प्रभाव को कम करने के लिए जलवायु अनुकूल एवं तनाव सहनशील तकनीकों के विकास की आवश्यकता बताई।डॉ. जाट ने कहा कि दलहनी फसलों में फास्फोरस एक महत्वपूर्ण पोषक तत्व है, जिसके समुचित एवं संतुलित प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। साथ ही पोषक तत्व उपयोग दक्षता बढ़ाने के लिए उन्नत प्रबंधन तकनीकों को अपनाने पर बल दिया।उन्होंने कहा कि अनुसंधान से विकसित सर्वोत्तम कृषि पद्धतियों का व्यापक स्तर पर किसानों तक पहुंचना और उनका प्रभावी अंगीकरण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। इसके लिए सुदृढ़ एवं विश्वसनीय बीज प्रणाली विकसित करना भी आवश्यक है, ताकि गुणवत्तायुक्त बीज किसानों को समय पर उपलब्ध हो सके।इस अवसर पर उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ डी के यादव द्वारा कहा गया कि उपलब्ध नवीन प्रजातियां एवं सफल तकनीक का दलहनी फसलों में समावेश कर दलहन का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ एस के झा द्वारा बताया गया कि दलहन के कुल उत्पादन में 60त्न की भागीदारी रबी दलहनी फसलों की है। दलहनी फसलें मिट्टी में नाइट्रोजन का यौगिकीकरण करती हैं।भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ जी पी दीक्षित द्वारा बताया गया कि वैज्ञानिकों एवं किसानों के बीच में तकनीकी की खाई को पूरा करने के लिए प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के माध्यम से किसानों में जागरूकता की जा रही है तथा कम लागत तकनीक जैसे जैविक उर्वरकों का प्रोत्साहित किया जा रहा है विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ संजीव गुप्ता द्वारा बताया गया कि दलहन उत्पादन में विश्वविद्यालय की सार्थक भूमिका रही है तथा देश में उकठा रोग के प्रति रोगरोधी प्रजाति का विकास सर्वप्रथम इस विश्वविद्यालय द्वारा किया गया है। उन्होंने कहा कि दलहन में आत्मनिर्भरता के लिए भारत सरकार द्वारा भरपूर बजट का आवंटन किया गया है। परियोजना समन्वयक डॉ शैलेश त्रिपाठी द्वारा गत वर्ष की उपलब्धियां का प्रस्तुतीकरण करते हुए बताया कि परियोजना के अंतर्गत बायो फोर्टीफाइड एवं मशीन से कटाई करने वाली प्रजातियों को प्रचार प्रसार किया जा रहा है। कार्यक्रम में सहायक महानिदेशक (बीज)डॉ बी आर चौधरी, कृषि आयुक्त डॉ पी के सिंह, डॉ मसूद अली आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आयोजन चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से किया गया जिसमें विभिन्न प्रदेशों से लगभग 100 दलहन वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया। उद्घाटन समारोह के पश्चात डॉ एम एल जाट द्वारा मृदा विज्ञान विभाग में स्थापित पेस्टीसाइड प्रयोगशाला का भ्रमण करते हुए प्रयोगशाला के रखरखाव एवं कार्य की प्रशंसा की गई।

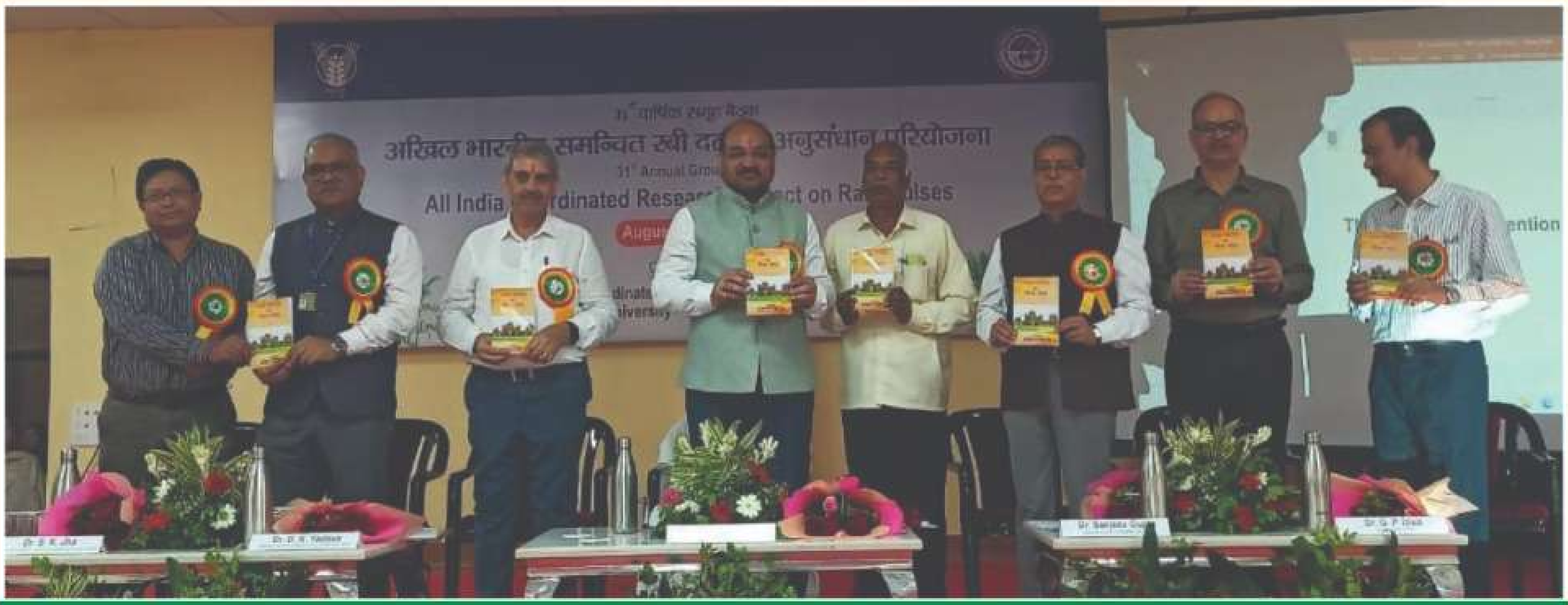

दलहन उत्पादन बढ़ाने को तोड़नी होगी 'उपज बाधा' : डॉ. एमएल जाट

संवाददाता/ डीटीएनएन

कानपुर। दलहन फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए वर्तमान चुनौतियों की प्राथमिकता तय कर लक्ष्य आधारित अनुसंधान और कार्ययोजना तैयार करनी होगी। किसानों के लिए उत्पादन के साथ लाभप्रदता भी सर्वोच्च प्राथमिकता है। यह बात कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. एमएल जाट ने शनिवार को चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में कही। वह अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की दो दिवसीय 31वीं वार्षिक समूह बैठक के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे।

डॉ. जाट ने कहा कि दलहन फसलों की उत्पादकता में आ रही बाधाओं को दूर कर 'उपज बाधा' को तोड़ना होगा। उत्पादन में अनिश्चितता का असर बाजार पर भी पड़ता है, इसलिए अनुसंधान एवं तकनीकों का विकास उत्पादन और बाजार दोनों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट उत्पादकता लक्ष्य निर्धारित करने के साथ जलवायु अनुकूल एवं तनाव सहनशील तकनीक विकसित करने पर जोर दिया। उन्होंने दलहनी फसलों में फास्फोरस के संतुलित प्रबंधन और पोषक तत्त्व उपयोग दक्षता बढ़ाने के लिए उन्नत तकनीकों को अपनाने की जरूरत बताई। कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा विकसित बेहतर कृषि पद्धतियों को व्यापक स्तर पर किसानों तक पहुंचाने के साथ उनका प्रभावी अंगीकरण सुनिश्चित किया जाए। इसके लिए गुणवत्तायुक्त बीज की समय पर उपलब्धता को लेकर मजबूत बीज प्रणाली विकसित करना भी जरूरी है। उप महानिदेशक फसल विज्ञान डॉ. डीके यादव ने कहा कि नवीन प्रजातियों और सफल तकनीकों को दलहनी फसलों में शामिल कर उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। सहायक महानिदेशक तिलहन एवं दलहन डॉ. एसके झा ने बताया कि देश के कुल दलहन उत्पादन में करीब 60 प्रतिशत हिस्सेदारी रबी दलहनी फसलों की है। दलहनी फसलें मिट्टी में नाइट्रोजन का यौगिकीकरण कर उसकी उर्वरता बढ़ाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. जीपी दीक्षित ने कहा कि वैज्ञानिकों और किसानों के बीच तकनीकी अंतर को कम करने के लिए प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों के माध्यम से किसानों को जागरूक किया जा रहा है। कम लागत वाली तकनीकों और जैविक उर्वरकों को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. संजीव गुप्ता ने कहा कि दलहन उत्पादन में विश्वविद्यालय की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। देश में उकठा रोग के प्रति रोगरोधी प्रजाति विकसित करने का कार्य सबसे पहले विश्वविद्यालय द्वारा किया गया था। उन्होंने कहा कि दलहन में आत्मनिर्भरता के लिए सरकार की ओर से पर्याप्त बजट का प्रावधान किया गया है। परियोजना समन्वयक डॉ. शैलेश त्रिपाठी ने गत वर्ष की उपलब्धियों की जानकारी देते हुए बताया कि परियोजना के तहत जैव-संवर्धित तथा मशीन से कटाई योग्य प्रजातियों को बढ़ावा दिया जा रहा है। बैठक में विभिन्न राज्यों से करीब 100 दलहन वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग किया। उद्घाटन के बाद डॉ. एमएल जाट ने मृदा विज्ञान विभाग में स्थापित कीटनाशक प्रयोगशाला का निरीक्षण किया और प्रयोगशाला के रखरखाव एवं कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम में सहायक महानिदेशक बीज डॉ. बीआर चौधरी, कृषि आयुक्त डॉ. पीके सिंह, डॉ. मसूद अली सहित अन्य वैज्ञानिक एवं अधिकारी मौजूद रहे।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्षः 18 अंक : 62 कानपुर, रविवार 30 अगस्त 2026 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्यः 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

दो दिवसीय रबी दलहन वार्षिक बैठक का शुभारंभ

दलहन अनुसंधान में उत्पादकता बढ़ाने के लिए 'उपज बाधा' तोड़ना होगा – डॉ. एम एल जाट

कानपुर। अखिल भारतीय समन्वित रबी दलहन अनुसंधान परियोजना की दो दिवसीय 31वीं वार्षिक समूह बैठक का शुभारंभ चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर में हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता डॉ. एम एल जाट, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा की गई।

अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. जाट ने कहा कि दलहन अनुसंधान में वर्तमान चुनौतियों की प्राथमिकता निर्धारित कर लक्ष्य आधारित कार्ययोजना बनाना आवश्यक है। किसान के लिए उत्पादन के साथ लाभप्रदता सर्वोच्च प्राथमिकता है, इसलिए अनुसंधान एवं तकनीकों का विकास किसानों की आय एवं लाभ बढ़ाने की दिशा में होना चाहिए। उन्होंने कहा कि उत्पादकता में अनिश्चितता से बाजार में भी अनिश्चितता उत्पन्न होती है, अतः उत्पादन एवं बाजार दोनों को ध्यान में रखते हुए तकनीकों का विकास जरूरी है। डॉ जाट ने दलहन फसलों की उत्पादकता में आ रही

बाधाओं को दूर करते हुए 'उपज बाधा' को तोड़ने तथा स्पष्ट उत्पादकता लक्ष्य निर्धारित करने पर जोर दिया। जैविक एवं अजैविक तनावों के प्रभाव को कम करने के लिए जलवायु अनुकूल एवं तनाव सहनशील तकनीकों के विकास की आवश्यकता बताई।डॉ. जाट ने कहा कि दलहनी फसलों में फास्फोरस एक महत्वपूर्ण पोषक तत्व है, जिसके समुचित एवं संतुलित प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। साथ ही पोषक तत्व उपयोग दक्षता बढ़ाने के लिए उन्नत प्रबंधन तकनीकों को अपनाने पर बल दिया।उन्होंने कहा कि अनुसंधान से विकसित सर्वोत्तम कृषि पद्धतियों का व्यापक स्तर पर किसानों तक पहुंचना और उनका प्रभावी अंगीकरण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। इसके लिए सुदृढ़ एवं विश्वसनीय बीज प्रणाली विकसित करना भी आवश्यक है, ताकि गुणवत्तायुक्त बीज किसानों को समय पर उपलब्ध हो सके।इस अवसर पर उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ डी के यादव द्वारा कहा गया कि उपलब्ध नवीन प्रजातियां एवं सफल तकनीक का दलहनी फसलों में समावेश कर दलहन का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ एस के झा द्वारा बताया गया कि दलहन के कुल उत्पादन में 60% की भागीदारी रबी दलहनी फसलों की है। दलहनी फसलें मिट्टी में नाइट्रोजन का यौगिकीकरण करती हैं।

भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ जी पी दीक्षित द्वारा बताया गया कि वैज्ञानिकों एवं किसानों के बीच में तकनीकी की खाई को पूरा करने के लिए प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के माध्यम से किसानों में जागरूकता की जा रही है तथा कम लागत तकनीक जैसे जैविक उर्वरकों का प्रोत्साहित किया जा रहा है।विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ संजीव गुप्ता द्वारा बताया गया कि दलहन उत्पादन में विश्वविद्यालय की सार्थक भूमिका रही है तथा देश में उकठा रोग के प्रति रोगरोधी प्रजाति का विकास सर्वप्रथम इस विश्वविद्यालय द्वारा किया गया है। उन्होंने कहा कि दलहन में आत्मनिर्भरता के लिए भारत सरकार द्वारा भरपूर बजट का आवंटन किया गया है। परियोजना समन्वयक डॉ शैलेश त्रिपाठी द्वारा गत वर्ष की उपलब्धियां का प्रस्तुतीकरण करते हुए बताया कि परियोजना के अंतर्गत बायो फोर्टीफाइड एवं मशीन से कटाई करने वाली प्रजातियों को प्रचार प्रसार किया जा रहा है। कार्यक्रम में सहायक महानिदेशक (बीज)डॉ बी आर चौधरी, कृषि आयुक्त डॉ पी के सिंह, डॉ मसूद अली आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आयोजन चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से किया गया जिसमें विभिन्न प्रदेशों से लगभग 100 दलहन वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया। उद्घाटन समारोह के पश्चात डॉ एम एल जाट द्वारा मृदा विज्ञान विभाग में स्थापित पेस्टीसाइड प्रयोगशाला का भ्रमण करते हुए प्रयोगशाला के रखरखाव एवं कार्य की प्रशंसा की गई।